INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

नाग पंचमी और नाग देवता के चमत्कारी मंदिर

By : Editor Published On : 12 Aug, 2021 05:06 AM IST

श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी को नाग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार इस बार 13 अगस्त 2021 को नागपंचमी मनाई जाएगी। यूं तो देश में नागदेवता के हजारों मंदिर या पूजा स्थल है परंतु यहां जानिए 10 खास मंदिरों के बारे में संक्षिप्त जानकारी।

1. नागचंद्रेश्वर मंदिर उज्जैन : नागचंद्रेश्वर का जो की उज्जैन के प्रसिद्ध महाकाल मंदिर की तीसरी मंजिल पर स्थित है। इसकी खास बात यह है कि यह मंदिर साल में सिर्फ एक दिन नागपंचमी पर ही दर्शनों के लिए खोला जाता है। ऐसी मान्यता है कि नागराज तक्षक स्वयं मंदिर में रहते हैं। इस मंदिर की खासियत यह है कि यहां पर शिवजी शिवजी, गणेशजी और मां पार्वती के साथ दशमुखी सर्प शय्या पर विराजित हैं। शिवशंभु के गले और भुजाओं में भुजंग लिपटे हुए हैं। उज्जैन के अलावा दुनिया में कहीं भी ऐसी प्रतिमा नहीं है।

2. कर्कोटक मंदिर उज्जैन : राजा जनमेजय के नागयज्ञ से बचकर कर्कोटक नामक एक नाग उज्जैन स्थित महाकाल वन में जाकर छुप गया था। ब्रह्माजी के कहने पर कर्कोटक नाग ने महाकाल वन में महामाया के सामने स्थित शिवलिंग की स्तुति की। शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा- जो नागधर्म का आचरण करते हैं, उनका विनाश नहीं होगा। इसके बाद कर्कोटक नाग उसी शिवलिंग में प्रवेश कर गया। तब से उस शिवलिंग को कर्कोटेश्वर कहते हैं। यहां पूजा करने से किसी भी प्रकार का सर्प दोष या भय नहीं लगता है।

3. वासुकि नाग मंदिर प्रयागराज : उत्तर प्रदेश के प्रयाग राज में संगम तट पर दारागंज क्षेत्र में वासुकि नाग का मंदिर स्थित है। वासुकि भगवान शिव के गले के नाग हैं और वे मनसादेवी के भाई है। नाग वासुकी मंदिर को शेषराज, सर्पनाथ, अनंत और सर्वाध्यक्ष भी कहा गया है। नाग पंचमी के दिन यहां एक बड़ा मेला लगता है।

4. तक्षकेश्वर नाथ प्रयागराज : प्रयागराज में ही यमुना किनारे एक और नाग मंदिर है जिसे तक्षकेश्वर नाथ का मंदिर कहते हैं। यह अति प्रचीन मंदिर है जिसका वर्णन पद्म पुराण के 82 पाताल खंड के प्रयाग माहात्म्य में 82वें अध्याय में मिलता है।

5. मन्नारशाला नाग मंदिर, केरल : केरल के अलेप्पी जिले से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित मन्नारशाला नाग मंदिर है। इस मंदिर की खासियत यह है कि यह पर एक या दो नहीं बल्कि 30 हजार नागों की प्रतिमाओं वाला यह मंदिर है जो 16 एकड़ में हरे-भरे जंगलों से घिरा हुआ है। नागराज को समर्पित इस मंदिर में नागराज तथा उनकी जीवन संगिनी नागयक्षी देवी की प्रतिमा स्थित है।

6. कर्कोटक नाग मंदिर भीमताल : नैनीताल के पास भीमताल है जहां पर एक प्राचीन नाग मंदिर है जिसे कर्कोटक नाग मंदिर कहते हैं। यहां कर्कोटक नामक पहाड़ी के टॉप पर यह मंदिर बना है। बताया जाता है कि यह मंदिर करीब 5 हजार वर्ष पुराना है। इस मंदिर का वर्णन स्कंदपुराण के मानसखंड में भी किया गया है।

7. धौलीनाग मंदिर, उत्तराखंड बागेश्वर : यह मंदिर उत्तराखंड के बागेशवर जिले में स्थित है जो बहुत ही पुराना है। यह मंदिर विजयपुर के पास एक पहाड़ी पर स्थित है। प्रत्येक नाग पंचमी को मंदिर में मेला लगता है। धवल नाग (धौलीनाग) को कालिय नाग का सबसे ज्येष्ठ पुत्र माना जाता है। यहां कालियान नाग ने शिव की तपस्या की थी। कुमाऊं क्षेत्र में नागों के अन्य भी कई प्रसिद्ध मंदिर हैं। जैसे छखाता का कर्कोटक नाग मंदिर, दानपुर का वासुकि नाग मंदिर, सालम के नागदेव तथा पद्मगीर मंदिर, महार का

शेषनाग मंदिर तथा अठगुली-पुंगराऊं के बेड़ीनाग, कालीनाग, फेणीनाग, पिंगलनाग मंदिर पिथौरगढ़, खरहरीनाग तथा अठगुलीनाग अन्य प्रसिद्ध मंदिर हैं। स्कंद पुराण के मानस खण्ड के 83वें अध्याय में धौलीनाग की महिमा का वर्णन है। देवभूमि उत्तराखंड में नागों के 108 मंदिर है। प्राचीन काल में टिहरी गढ़वाल में रहने वाले नागवंशी राजाओं और नागाओं के वंशज आज भी नाग देवता की पूजा करते हैं। प्राचीन समय से इस क्षेत्र में बहुत से सिद्ध नाग मन्दिर स्थापित हैं।

8. नाग
मंदिर, पटनीटॉप : जम्मू और कश्मीर राज्य के पीर पंजाल पर्वत श्रंखला में पटनीटॉप स्थित है। यहां मंतलाई में एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है 600 साल पूरान नाग मंदिर। नाग पंचमी उत्सव के दौरान हजारों तीर्थयात्री इस मंदिर में आते हैं। कश्मीर का अनंतनाग क्षेत्र पहले नागवंशियों का गढ़ था।

9. नागपुर इंदौर का नाग मंदिर : मध्यप्रदेश के इंदौर से करीब 30 किलोमीटर दूर नागपुर गांव में एक अद्‌भुत मंदिर है। कहते हैं कि यहां पर दोमुंहे सांप दर्शन देते हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार यहां एक महिला ने दोमुंहे सांप को जन्म दिया था। यहां दो नागों की 3 फुट ऊंची प्रतीमा है। यह भी कहा जाता है कि यहां महिला ने नाग नागिन को जन्म दिया। लोगों ने नागिन को मार दिया तो नाग ने पत्थर का रूप धर लिया।

10. भीलट देव का मंदिर : मध्यप्रदेश के बड़वानी में स्थित नागलवाड़ी शिखरधाम स्थित 700 साल पुराने भीलटदेव मंदिर को सबसे चमत्कारिक मंदिर माना जाता है। यहां हर नागपंचमी पर मेला लगता है। कहते हैं कि 853 साल पहले प्रदेश के हरदा जिले में नदी किनारे स्थित रोलगांव पाटन के एक गवली परिवार में बाबा भीलटदेव का जन्म हुआ था। इनके माता-पिता मेदाबाई और नामदेव शिवजी के भक्त थे, परंतु उन्हें को संतान नहीं थी तो उन्होंने शिवजी की कठोर तपस्या की। इसके बाद भीलट देवजी का जन्म हुआ। फिर कहा जाता है कि शिव-पार्वती ने इनसे वचन लिया था कि वो रोज दूध-दही मांगने आएंगे। अगर नहीं पहचाना, तो बच्चे को उठा ले जाएंगे। एक दिन इनके मां-बाप भूल गए, तो शिव-पार्वती बालक भीलदेव को उठा ले गए। बदले में पालने में शिवजी अपने गले का नाग रख गए। इसके बाद मां-बाप ने अपनी भूल स्वीकार की तब शिवजी ने कहा कि पालने में जो नाग छोड़ा है, उसे ही अपना बेटा समझें। इस तरह बाबा भीलटदेव को लोग नागदेवता के रूप में पूजते हैं PLC

URL : https://www.internationalnewsandviews.com/nag-panchami-and-nag-devtas-miracle-temple/

INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.